प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 1 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

वन प्रकृति की अमूल्य संपदा है। मानव–जीवन इससे अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। मानव की खाद्य सामग्री और आवास की समस्या भी इन्होंने ही सुलझाई थी। हमारे ग्रंथ, उपनिषद् और आरण्यक आदि वनों में ही रचे गए। महाकवि वाल्मीकि द्वारा रचित–ग्रंथ रामायण भी तपोवन में ही रूपाकार पा सका था। औषधियाँ भी हमें वनों से ही मिलती हैं। विश्व की कोई सभ्यता एवं संस्कृति नहीं है जिसने वनों के मूल्य को न आँका हो, उनकी महत्ता को न समझा हो, इसलिए वन–संरक्षण की आवश्यकता है। कागज बनाने तथा मकान के लिए लकड़ी वनों से ही प्राप्त होती है।

पेड़–पौधे वर्षा का कारण बनकर पर्यावरण की रक्षा तो करते ही हैं, इनमें कार्बन–डाइऑक्साइड को शोषित करने की शक्ति भी होती है। सिंचाई और पेयजल की समस्या का समाधान करके नदियाँ जल की अमृत धारा प्रवाहित कर रही हैं?

1. रामायण ग्रंथ की रचना किसने की थी? 2

उत्तर : रामायण ग्रंथ की रचना महाकवि वाल्मीकि ने की थी।

2. वनों द्वारा मानव की कौन–सी दो समस्याएँ सुलझाई गईं? 2

उत्तर : वनों द्वारा मानव की खाद्य सामग्री और आवास की समस्या को सुलझाया गया।

3. औषधियाँ तथा कागज बनाने के लिए लकड़ी हमें कहाँ से प्राप्त होती है? 2

उत्तर : औषधियाँ तथा कागज बनाने के लिए लकड़ी हमें वनों से ही प्राप्त होती हैं।

4. पेड़–पौधों से होने वाले कोई दो लाभ बताइए। 2

उत्तर : पेड़–पौधे वर्षा का कारण बनकर पर्यावरण की रक्षा करते हैं, इसके अतिरिक्त ये कार्बन–डाइऑक्साइड को भी शोषित करते हैं।

5. प्रकृति की अमूल्य संपदा क्या है? 1

उत्तर : प्रकृति की अमूल्य संपदा वन है।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : वन संपदा का महत्व।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. सुनीता और विनीता बाजार जा रही हैं। (रचना के आधार पर वाक्य–भेद लिखिए)

उत्तर : सरल वाक्य

2. श्रीमती शर्मा की बहू चालाक है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : श्रीमती शर्मा की जो बहू है, वह बहुत चालाक है।

3. जो लोग ईमानदार होते हैं, वे दयालु होते हैं। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : ईमानदार लोग दयालु होते हैं।

4. पौधे लगाकर माली चला गया। (रचना के आधार पर वाक्य–भेद लिखिए)

उत्तर : सरल वाक्य

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. मैं चलता हूँ। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : मुझसे चला जाता है।

2. अनिल द्वारा कार से विद्यालय जाया जाता है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : अनिल कार से विद्यालय जाता है।

3. रवि पुस्तक पढ़ता है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : रवि द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

4. बच्चा दौड़ता है। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : बच्चे से दौड़ा जाता है।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. मजदूर काम करके घर चले गये।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक, **चले गए** क्रिया का कर्ता।

2. मेरा कुत्ता तेज दौड़ता है।

उत्तर : अकर्मक क्रिया, कर्तृवाच्य, कर्तरि प्रयोग, एकवचन, पुल्लिंग।

3. अभी मैं कुछ नहीं करूँगा।

उत्तर : अनिश्चयवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्मकारक।

4. बाजार में अनेक प्रकार के आम मिल रहे हैं।

उत्तर : अनिश्चित संख्यावाची विशेषण, बहुवचन, पुल्लिंग-स्त्रीलिंग दोनों में प्रयोग हो सकता है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- $1 \times 4 = 4$

1. रौद्र रस की परिभाषा देकर इसका संचारी भाव बताइए।

उत्तर : जहाँ पर अपने गुरू, आत्मीय की निंदा, देशभक्ति का अपमान होता है, वहाँ पर शत्रु से प्रतिशोध की भावना **क्रोध** स्थायी भाव के साथ पुष्ट होकर रौद्र रस में व्यक्त होती है। इसका संचारी भाव है- आवेग, श्रम, उग्रता आदि।

2. निम्नलिखित काव्य पंक्ति में प्रयुक्त रस का नामोल्लेख कीजिए-

गिद्ध जाँघ को खोदि-खोदि कै मांस उपारत,

श्वान अंगुरिन काटि-काटि कै खात विदारत।

उत्तर : वीभत्स रस

3. निम्नलिखित काव्य पंक्ति में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए-

धात्री सुभद्रा को समझकर माँ मुझे था मानता।

पर आज तू ऐसा हुआ मानो न था पहचानता।।

उत्तर : करूण रस।

4. निम्नलिखित काव्य पंक्ति में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए-

सतगुरू हम सूं रीझि के कह्या एक प्रसंग।

बरसा बादल प्रेम का भीजि गया सब अंग।।

उत्तर : भक्ति रस।

5. शृंगार रस का स्थायी भाव लिखिए।

उत्तर : रति

खण्ड-ग 34

(पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

हालदार साहब की आदत पड़ गई, हर बार कस्बे से गुजरते समय चौराहे पर रूकना, पान खाना और मूर्ति को ध्यान से देखना। एक बार जब कौतूहल दुर्दमनीय हो उठा तो पानवाले से पूछ लिया, क्यों भई! क्या बात है? यह तुम्हारे नेताजी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है?

पानवाला एक काला, मोटा और खुशमिजाज आदमी था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर वह आँखों ही आँखों में हँसा। उसकी तोंद थिरकी। पीछे घूमकर उसने दुकान के नीचे पान थूका और अपनी लाल-काली बत्तीसी दिखाकर बोला, कैप्टन चश्मेवाला करता है।

क्या करता है? हालदार साहब कुछ समझ नहीं पाए।

चश्मा चेंज कर देता है। पान वाले ने समझाया।

क्या मतलब? क्यों कर देता है? हालदार साहब अब भी समझ नहीं पाए।

कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा, तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उधर दूसरा बिठा दिया। अब हालदार साहब को बात कुछ-कुछ समझ में आई। एक चश्मे वाला है जिसका नाम कैप्टन है। उसे नेताजी की बगैर चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती है। बल्कि आहत करती है।

1. हालदार साहब को क्या आदत पड़ गई थी? उन्होंने पानवाले से क्या पूछा? 2

उत्तर : हालदार साहब को आदत पड़ गई थी कि हर बार कस्बे से गुजरते समय चौराहे पर रूकते, पान खाते और मूर्ति को ध्यान से देखते। एक बार उन्होंने पानवाले से पूछ लिया कि तुम्हारे नेता जी का चश्मा हर बार बदल कैसे जाता है? इसका कारण बताओ।

2. पानवाला कैसा आदमी था? हालदार साहब का प्रश्न सुनकर उसकी प्रतिक्रिया कैसी थी? 2

उत्तर : पानवाला काला, मोटा और खुशमिजाज आदमी था। हालदार साहब का प्रश्न सुनकर उसकी आँखों में हास्य का भाव उभरा। उसकी तोंद थिरकी, पीछे घूमकर दुकान के नीचे पान थूका। फिर उसने लाल-काली बत्तीसी दिखाकर कहा कि यह काम कैप्टन चश्मेवाला करता है।

3. चश्मे वाला नेता जी की मूर्ति पर चश्मा क्यों पहनाता था? 2

उत्तर : कैप्टन चश्मेवाले के मन में नेता जी के लिए सम्मान था, देशभक्ति की भावना भी थी। उसे नेता जी की बिना चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती थी, इसलिए वह नेताजी की मूर्ति पर चश्मा पहना देता था।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. **लखनवी अंदाज** कहानी में निहित संदेश पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : **लखनवी अंदाज** कहानी से संदेश मिलता है कि व्यक्ति को वास्तविकता के धरातल पर रहकर ही अपना जीवन जीना चाहिए। काल्पनिक और बनावटी जीवन–शैली बनाकर हम दूसरों को तो कुछ देर के लिए आकर्षित कर सकते हैं, परन्तु आत्मविश्लेषण करने पर केवल निराशा ही हाथ लगती है।

2. लेखिका मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व पर किन–किन व्यक्तियों का असर पड़ा?

उत्तर : लेखिका के व्यक्तित्व पर उनके पिता, हिन्दी प्राध्यापि–का शीला अग्रवाल का विशेष प्रभाव पड़ा। पिताजी के क्रोधी एवं अहंकारी स्वभाव ने लेखिका को विद्रोही एवं बहिर्मुखी बना दिया। शीला अग्रवाल के व्यक्तित्व ने उन्हें देशभक्ति आन्द–ोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

3. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेला क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी?

उत्तर : भगत की पुत्रवधू उन्हें निम्नलिखित कारणों से अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी–

1. **कर्तव्य निर्वाह–** भगत अब अकेले रह गए थे, उसकी पुत्रवधू अपने ससुर की सेवा करना अपना कर्तव्य और धर्म समझती थी। वह चिंतित थी कि उसके चले जाने पर भगत जी के खान–पान, रहन–सहन की देखभाल कौन करेगा? घर में कोई भी तो नहीं है।
2. **वृद्धावस्था–** भगत जी वृद्ध हो गए थे, उनकी पतोहू को उनके स्वास्थ्य की चिंता थी। बीमार पड़ जाने पर उनकी देखभाल कौन करेगा। मुख्य रूप से इन्हीं कारणों से उनकी पुत्रवधू उन्हें अकेला छोड़कर नहीं जाना चाहती थी।

4. फादर की मृत्यु पर रोने वालों की कमी क्यों नहीं थी? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : फादर की मृत्यु पर रोने वालों की कमी नहीं थी क्योंकि वे मानवीय करूणा की दिव्य मूर्ति थे। वे किसी से रिश्ता बना–कर तोड़ते नहीं थे। दस वर्ष बाद भी वे जब मिलते तो रिश्तों की गंध महसूस होती थी। वे जहाँ कहीं भी जाते थे तो वहाँ के अपने परिचितों से अवश्य मिलते थे।

5. पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : पानवाला एक काला, मोटा और खुशमिजाज आदमी था। उसकी तोंद इतनी बढ़ी हुई थी कि कभी–कभी बात करने पर थिरक भी जाती थी। ज्यादा पान खाने के कारण उसके सब दाँत लाल–काले हो गए थे। वह पीछे घूमकर दुकान के नीचे बार–बार पीक थूक देता था। आँखों ही आँखों में हँसकर अपनी प्रतिक्रियाएँ प्रकट करता था। वह देशी भाषा में बहुत सटीक बात करता था। जरूरत से ज्यादा प्रश्नों का पूछा जाना उसे पसंद नहीं था। पानवाला भावुक भी था। चश्मेवाले के मरने की खबर देते हुए वह उदास हो गया। उसकी आँखें भर आई।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीती–नदी मैं पाउँ न बोरयौ, दृष्टि न रूप परागी।
सूरदास अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी।।

1. अपरस रहत सनेह तगा तै, का आशय स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : अपरस रहत सनेह तगा तै, का आशय यह है कि उद्धव श्रीकृष्ण के साथ रहते हैं फिर भी वे श्रीकृष्ण के प्रेम रूपी धागे से नहीं बँधे अर्थात् वे प्रेम बंधन में नहीं बँधे। उनसे प्रेम नहीं करते।

2. गोपियाँ किसे बड़भागी कह रहीं हैं और क्यों? 2

उत्तर : गोपियाँ उद्धव को बड़भागी कह रहीं हैं क्योंकि वे श्रीकृष्ण के साथ रहकर भी उनसे प्रेम नहीं करते। वे उनके स्नेह से वंचित रहे और प्रेम बंधन में भी नहीं पड़े। वस्तुतः वे उद्धव को बड़भागी कहकर उनका उपहास कर रहीं हैं। वास्तव में उन्हें अभागा बता रही हैं।

3. प्रीति–नदी क्या है? उसमें किसने पैर नहीं डुबोए? 2

उत्तर : **प्रीति–नदी** से तात्पर्य प्रेमरूपी नदी या श्रीकृष्ण के अगाध प्रेम से है, जिनके पास रहकर भी उद्धव ने कभी पैर भी नहीं डुबोए।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. लक्ष्मण ने धनुष खण्डित होने के क्या–क्या कारण बताए हैं? इस कविता में कौनसा रस है?

उत्तर : लक्ष्मण ने धनुष खण्डित होने के निम्नलिखित कारण बताए हैं–

1. वह धनुष पुराना और कमजोर था।
2. श्रीराम ने उसे नया समझकर उठा लिया और वह उठाते ही खंडित हो गया।

इस कविता में रौद्र रस है।

2. **कन्यादान** कविता का मूल भाव लिखिए।

उत्तर : **कन्यादान** कविता नारी जाग्रति से संबंधित है। इसमें स्त्री के परम्परागत रूप से हटकर यथार्थ रूप का बोध कराया गया है। यह कविता स्त्री की कमजोरी को भी उजागर करती है। यदि स्त्री अपनी कमजोरियों के प्रति सचेत हो जाए, अपनी

कोमलता और सरलता के प्रति सजग हो तो वह शक्तिशाली बन सकती है और प्रतिकूलताओं पर विजय पा सकती है।

3. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर **गरजने** के लिए कहता है, क्यों?

उत्तर : कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए कहता है, क्योंकि कवि के मतानुसार बादल क्रांति लाने वाला है, क्रांति कभी दबे पाँव नहीं आती। फुहार, रिमझिम तथा बरसना कोमलता के सूचक हैं, नारीत्व के लक्षण हैं। कवि बादल को पौरूषवान के रूप में चित्रित करना चाहता है, अतः उससे गरजने के लिए कहता है।

4. संगतकार की आवाज सुंदर, कमजोर और काँपती हुई क्यों नजर आती है?

उत्तर : संगतकार की आवाज मुख्य गायक की गरजदार तथा भारीभरकम आवाज को कोमलता प्रदान करती है। वह अपनी आवाज को कभी ऊपर नहीं उठाना चाहता। वह मुख्य गायक की आवाज की बराबरी भी नहीं करना चाहता। इसलिए इसकी आवाज सुंदर, कमजोर और काँपती हुई नजर आती है।

5. गोपियों ने किसकी तुलना कड़वी ककड़ी से की है और क्यों?

उत्तर : गोपियों ने योग ज्ञान की तुलना कड़वी ककड़ी से की है। उनका कहना था कि जिस प्रकार कड़वी ककड़ी खाई नहीं जाती उसी प्रकार उद्धव द्वारा कही गई योग ज्ञान की बातें उन्हें स्वीकार नहीं हैं क्योंकि उन्होंने अपने मन में श्रीकृष्ण को बसा लिया है। वे उन्हीं का नाम रटती रहती हैं। कृष्ण ही उनके लिए सब कुछ हैं। उनका मन श्रीकृष्ण में रम गया है। अतः उन्हें किसी योग की कोई आवश्यकता नहीं है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए- $3 \times 2 = 6$

1. जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर सरकारी तंत्र में जो चिंता और बदहवासी दिखाई देती है वह अफसरों के किस चरित्र को दर्शाती है और क्या वह चरित्र गांधी जी के सपनों के लोकतंत्र के अनुकूल है?

उत्तर : जॉर्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर सरकारी तंत्र की चिंता और बदहवासी अफसरों की लापरवाही, अविवेकपूर्ण सोच और अपने स्वार्थ के प्रति चिंता को दर्शाती है। सरकारी तंत्र पहले से जागरूक नहीं है। समस्या आने पर उसकी नींद खुलती है। बार-बार मीटिंग बुलाई जाती है लेकिन कोई हल नहीं मिलता, फाइलें खँगाली जाती हैं लेकिन कोई जानकारी नहीं मिलती। अब अपनी तरक्की रोक दिए जाने, दंडित कर दिए जाने, स्थानांतरण कर दिए जाने या अपमानित होने से बचने के लिए हर अफसर, हर विभाग दूसरे पर जिम्मेदारी डालकर अपने को बचाने की कवायद में जुट जाता है।

2. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर : भोलानाथ और उसके साथियों के खेलों में गाँव में होने वाले सभी कामों की झलक मिलती है। वे कंकड़, पत्ते, दीयों और टूटे घड़ों के टुकड़ों को इकट्ठा करके खेल खेलते थे। खेती, शादी, मिठाई की दुकान लगाने जैसे खेलों में वे भविष्य में किए जाने वाले कामों को अनुभव करते थे। हमारे खेल और खेलने की सामग्री उनसे भिन्न है। वर्तमान में हम क्रिकेट, बैडमिंटन और हॉकी जैसे खेल खेलते हैं। घर में रहकर शतरंज और कैरम जैसे खेल खेलते हैं।

3. लेखिका मधु कांकरिया ने किस शहर को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा है और क्यों?

उत्तर : लेखिका मधु कांकरिया ने गैंगटॉक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा है क्योंकि यहाँ के लोग बहुत परिश्रमी होते हैं। वे लोग अपने जीवन निर्वाह के लिए बहुत मेहनत करते हैं। पहाड़ी औरतें पत्थर तोड़ती हैं। काम करते समय अपने बच्चों को अपनी पीठ पर बाँधे रहती हैं। यहाँ के बच्चों को स्कूल जाने के लिए भी मेहनत करनी पड़ती है। वहाँ स्कूल जाना भी आसान नहीं है।

खण्ड-घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

(1) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व

संकेत-बिंदु : भूमिका- अनुशासन का अर्थ ✲ विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता ✲ अनुशासन के लाभ ✲ अनुशासनहीनता से हानियाँ ✲ उपसंहार।

(2) कम्प्यूटर का संसार/कम्प्यूटर क्रांति

संकेत-बिंदु : प्रस्तावना-कम्प्यूटर का इतिहास ✲ इसकी उपयोगिता ✲ जीवन में इसका योगदान ✲ उपसंहार

(3) प्राकृतिक आपदाएँ और भारत

संकेत-बिंदु : भूमिका-भारत की भौगोलिक स्थिति ✲ प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार ✲ इनके कारण ✲ निदान के उपाय ✲ सरकार की भूमिका ✲ उपसंहार

उत्तर :

(1) विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व

संकेत-बिंदु : भूमिका- अनुशासन का अर्थ ✲ विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता ✲ अनुशासन के लाभ ✲ अनुशासनहीनता से हानियाँ ✲ उपसंहार।

भूमिका-अनुशासन का अर्थ- अनुशासन का शाब्दिक अर्थ है, नियमों में बँधकर चलना। अनुशासन मानव जीवन का आभूषण है, श्रृंगार है। विद्यार्थी जीवन के लिए तो अनुशासन बहुत ही महत्वपूर्ण है। विद्यार्थी जीवन का मुख्य लक्ष्य विद्या प्राप्त करना है और विद्या प्राप्ति के लिए अनुशासन का पालन अत्यंत आवश्यक है।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की आवश्यकता– अनुशासन का महत्व चारों ओर दिखाई देता है। सूर्य प्रतिदिन नियम से निकलता है और नियम से ही अस्त होता है। रात और दिन का चक्र भी निर्धारित नियमों के अनुसार चलता रहता है। पृथ्वी निर्धारित नियमों के अनुसार ही अपनी धुरी पर घूमती है। प्रकृति के नियमों के अनुसार ही काम करने का परिणाम है कि हम धरती पर सुख से जीवन व्यतीत करते हैं। विद्यार्थी जीवन भावी जीवन की नींव है। इस जीवन में यदि अनुशासन में रहने की आदत पड़ जाए तो भविष्य में प्रगति के द्वार खुल जाते हैं। एक ओर तो हम कहते हैं कि आज का विद्यार्थी कल का नेता है और दूसरी ओर वही विद्यार्थी अनुशासन भंग करके आज राष्ट्र के आधार स्तंभों को गिराए, यह उचित नहीं है।

अनुशासन के लाभ– अनुशासित विद्यार्थी ही राष्ट्र को ऊँचा उठा सकते हैं, क्योंकि अनुशासन अपनाकर वह अपने जीवन में सद्गुणों का विकास करता है। इससे उसका स्वभाव तथा मनोवृत्तियाँ परिष्कृत होकर उसे निरंतर सद्कार्यों के लिए प्रेरित करती रहती हैं। वह परिश्रमी एवं कर्मठ बन कर अपने समाज एवं राष्ट्र का विकास करता है। आज का विद्यार्थी कल का राष्ट्र–निर्माता है। इसलिए उसका अनुशासित होना समस्त राष्ट्र को अनुशासित बनाने के समान है। इसके लिए सभी को मिल–जुलकर प्रयत्न करना चाहिए तथा विद्यार्थियों को अपने गुरुजनों द्वारा बताए हुए सद्मार्गों पर चलना चाहिए।

अनुशासनहीनता से हानियाँ– विद्यार्थी जीवन में अनुशासनहीनता अत्यंत हानिकारक है। माता –पिता मेहनत से कमाया हुआ धन खर्च करके अपनी संतान को पढ़ने के लिए भेजते हैं। जब विद्यार्थी अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं, तो वे अपने माता–पिता का विश्वास भी तोड़ देते हैं। वे अनुशासन भंग कर स्वयं अपने भविष्य को अंधकार में डाल देते हैं। अध्यापक के साथ दुर्व्यवहार करना, कक्षा से भागकर दोस्तों के साथ मौज–मस्ती करना, सिनेमा देखने जाना तथा परीक्षा के दिनों में पढ़ाई पर ध्यान न देना, ये सभी अनुशासनहीनता के ही रूप हैं।

उपसंहार– बच्चों में शक्ति का अपार भंडार होता है। उसका सही प्रयोग करना चाहिए। उनके खाली समय का भी सही उपयोग होना चाहिए क्योंकि भिन्न–भिन्न तरह की गतिविधियों में व्यस्त विद्यार्थी भटकेंगे नहीं। वे सही और सीधी राह पर चलते हुए प्रगति पथ पर आगे बढ़ेंगे।

(2) कम्प्यूटर का संसार/कम्प्यूटर क्रांति

संकेत–बिंदु : प्रस्तावना–कम्प्यूटर का इतिहास ✲ इसकी उपयोगिता ✲ जीवन में इसका योगदान ✲ उपसंहार

प्रस्तावना–कम्प्यूटर का इतिहास– कम्प्यूटर का शाब्दिक अर्थ है, **इलेक्ट्रोनिक गणक**। इसकी व्युत्पत्ति लैटिन शब्द **कम्प्यूट** से हुई है जिसका अर्थ है– **गिनना**। यह इस युग का एक और विस्मय हैं। आधुनिक कम्प्यूटर के जनक ब्रिटिश गणितज्ञ चार्ल्स बैवेज हैं। इन्होंने ही सबसे पहले पाँच अंगों में सम्पूर्ण आधुनिक कम्प्यूटर की रचना शैली का आविष्कार किया। कम्प्यूटर के पाँच अंग इस प्रकार हैं– स्मरण यंत्र (स्टोर), अंकगणित यंत्र (मिल), नियंत्रण कक्ष (कंट्रोल), आंतरिक यंत्र भाग (इनपुट), बाह्य यंत्र भाग (आउटपुट)।

इनमें से पहले तीन अंगों को सम्मिलित रूप में **सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट** (सी.पी.यू.) या **कम्प्यूटर का मस्तिष्क** कहा जाता है। कम्प्यूटर में तथ्य और निर्देश प्रवेश कराने के लिए विशेष भाषा की आवश्यकता पड़ती है जिसे **प्रोग्रामिंग लैंग्वेज** कहते हैं।

इसकी उपयोगिता– वर्तमान समय में कम्प्यूटर अनेक प्रकार के कार्य करता है। इसका प्रयोग अब हर बड़े व्यवसाय, तकनीकी संस्थान, बड़े–बड़े प्रतिष्ठानों की गणितीय गणना, समूहरूप में बड़े–बड़े उत्पादों का लेखा–जोखा, भावी उत्पादन का अनुमान, बड़ी–बड़ी मशीनों की परीक्षा और भविष्य गणना, परीक्षा परिणामों की गणना, वर्गीकरण, योग, गुणा, भाग, अंतरिक्ष यात्रा, मौसम संबंधी जानकारी, व्यवसाय, चिकित्सा और समाचार–पत्रों आदि सभी क्षेत्रों में हो रहा है। आज कम्प्यूटर प्रणाली ही सर्वाधिक उपयोगी और त्रुटिहीन जानकारी देती है।

जीवन में इसका योगदान– आज सभी क्षेत्रों में कम्प्यूटर की उपयोगिता बढ़ रही है। जैसे– रेलवे स्टेशन पर कम्प्यूटर के बिना टिकिट बुक नहीं होती। बैंकों में इसके बिना कोई काम नहीं होता। यह अनेक प्रकार के वीडियो गेम भी खेल सकता है। प्रसिद्ध खिलाड़ी अनातोली कास्पारोव ने तो कम्प्यूटर से शतरंज की बाजियाँ खेली थीं। कम्प्यूटर रोगी का रोग बता सकता है। यह सड़कों पर वाहनों के आवागमन का नियंत्रण कर सकता है। इतना ही नहीं, अपितु उँगलियों के निशानों के आधार पर असली अपराधी की सही पहचान कर सकता है। देखा जाए तो कम्प्यूटर वास्तव में आज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

उपसंहार– अंत में यही कहा जा सकता हैं कि देश को आर्थिक दृष्टि से सुसमृद्ध करने में कम्प्यूटर अत्यंत उपयोगी रहेगा। अतः हमें उसका उपयोग करना सीखना ही पड़ेगा, नहीं तो भारत अन्य राष्ट्रों के विकास की गति से बहुत ही पीछे छूट जाएगा।

(3) प्राकृतिक आपदाएँ और भारत

संकेत–बिंदु : भूमिका–भारत की भौगोलिक स्थिति ✲ प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार ✲ इनके कारण ✲ निदान के उपाय ✲ सरकार की भूमिका ✲ उपसंहार

भूमिका–भारत की भौगोलिक स्थिति– प्राकृतिक वस्तुओं के अत्यधिक दोहन के परिणामस्वरूप प्रकृति कुपित होकर अपना विनाशकारी रूप दिखाती है।

प्राकृतिक आपदाओं के प्रकार– सदियों से प्राकृतिक आपदायें मनुष्य के अस्तित्व के लिए चुनौती रही हैं। जंगलों में आग, बाढ़, भूकम्प, ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक आपदायें बार–बार

मनुष्य को चेतावनी देती हैं। वर्तमान में हम प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध इस्तेमाल कर रहे हैं, जिससे संतुलन बिगड़ रहा है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकंप, हिमपात, महामारी, हिमस्खलन, आँधी तूफान, चक्रवात, समुद्री तूफान, सुनामी, ज्वालामुखी-विस्फोट आदि प्राकृतिक आपदाएँ हैं। इन प्राकृतिक आपदाओं के कारण प्रतिवर्ष जान-माल की बहुत हानि होती है। मनुष्य चाहे प्रकृति पर विजय पाने का कितना भी दावा क्यों न करे, आज भी प्रकृति पूरी तरह से उसके नियंत्रण में नहीं है।

इनके कारण- कुछ साल पहले गुजरात में भूकंप से लाखों लोग बेघर हो गए, सैकड़ों लोग काल कवलित हो गए और करोड़ों-अरबों रूपये की संपत्ति नष्ट हो गई। 26 दिसम्बर 2004 को सुनामी के कारण जान-माल की अपूरणीय क्षति हुई। पश्चिम बंगाल और बिहार में चक्रवात (साइक्लोन) के कारण सैकड़ों लोग मारे गए, हजारों घर तहस-नहस हो गए। वर्ष 2013 के उत्तरार्ध में बादल फटने के कारण आई बाढ़ से उत्तराखण्ड के केदारनाथ में भारी तबाही हुई थी। बाढ़, सूखा और ओले का प्रकोप तो हर साल दिखाई देता है।

निदान के उपाय- प्राकृतिक प्रकोपों से बचाव के लिए पेड़ों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगानी होगी। भूजल-स्तर को नियमित करना होगा, प्रकृति के अत्यधिक दोहन पर अंकुश लगाना होगा।

सरकार की भूमिका- सरकार की ओर से भूकंप, सुनामी, चक्रवात आदि की पूर्व सूचना जारी की जानी चाहिए। इनसे प्रभावित होने वाले संभावित इलाकों के लोगों को सुरक्षित स्थान में स्थानान्तरित करवाना और उनके जान-माल की रक्षा करने का उत्तरदायित्व सरकार को लेना चाहिए। पुनर्वास की समस्या का हल सरकारी और गैर-सरकारी ढंग से ढूँढना चाहिए। आपदा प्रबंधन के सभी उपाय अपनाने चाहिए।

उपसंहार- मनुष्य को प्रकृति से छेड़-छाड़ बंद करनी होगी, वृक्षारोपण पर अधिक ध्यान देना होगा तथा प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग सोच-समझकर करना होगा।

12. निकट के पूजाघरों में लाउडस्पीकर के मनमाने प्रयोग से होने वाली परेशानियों का उल्लेख करते हुए थानाध्यक्ष को एक पत्र लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
श्रीमान् थानाध्यक्ष महोदय,
न्यू गुप्ता कॉलोनी,
नई दिल्ली-94
दिनांक - 07.03.2019

विषय : लाउडस्पीकरों के मनमाने प्रयोग से होने वाली परेशानियों के निवारण हेतु।

महोदय,

निवेदन है कि मैं आपके क्षेत्र 70, यमुना विहार, दिल्ली का निवासी हूँ तथा नगर निगम पार्षद भी हूँ। मेरे घर के एक ओर मस्जिद है तो दूसरी ओर एक भव्य मंदिर है। आजकल छात्रों की परीक्षाएँ चल रही हैं, क्षेत्र में लाउडस्पीकरों के मनमाने प्रयोग पर सरकार/प्रशासन ने पाबंदी भी लगा रखी है। इतने पर भी चार बजे प्रातः से ही पूजास्थलों पर लोग मनमाने ध्वनि विस्तारक यंत्रों के प्रयोग से बाज नहीं आ रहे हैं। छात्रों को तो परेशानी होती है, आम नागरिक, बीमार बच्चे भी इससे अत्यधिक परेशान हैं।

अतः आपसे विनम्र प्रार्थना है कि समाज हित में लाउडस्पीकरों के पूजास्थलों पर हो रहे मनमाने प्रयोग को यथाशीघ्र ही बंद कराने की कृपा करेंगे। जिससे अनावश्यक उच्च ध्वनि से उत्पन्न शोरगुल से मुक्ति मिल सके, थके-हारे लोग सही तरीके से विश्राम कर सकें तथा छात्रगण सुचारू रूप से अध्ययन कर सकें। आशा है कि आप यथाशीघ्र उचित कार्यवाही कर अनुगृहीत करेंगे।

आभार सहित!
भवदीय
रजनीश कुमार

अथवा

मानव-जीवन में भागदौड़, उलझनें और तनाव हैं। ऐसे में हास्य-विनोद का महत्व बताते हुए मित्र को एक पत्र लगभग 80-100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
दिनांक- 19 अगस्त, 2018

प्रिय मित्र अभिनंदन,
सप्रेम नमस्कार।

मित्र, कितने दिन बाद तुम्हें पत्र लिखने का समय निकाल पाया हूँ। वास्तव में आजकल हर इन्सान का जीवन भाग-दौड़, उलझनों और तनावों से भरा है। ऐसे में केवल आपसी हास्य-विनोद ही जिंदगी को कुछ तरोताजा कर पाता है। हास्य-विनोद से हम फुर्सत के अपने उन थोड़े से पलों को इस तरह से जी पाते हैं कि सब उलझनें और तनाव लुप्त हो जाते हैं। यदि हम लोगों से हलके-फुलके तरीके से तनाव रहित बातचीत करें तो भी कई प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाता है। आज की परिस्थितियों में हास्य-विनोद का महत्व और भी बढ़ गया है। मेरी शुभकामना है कि तुम सदैव मुस्कुराते रहो और जीवन का भरपूर आनंद उठाओ।

चाचा जी एवं चाची जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र,
कमल

13. दिल्ली के मशहूर गोलगप्पे की दुकान का किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र में छपने योग्य लगभग 25 से 50 शब्दों में

एक विज्ञापन तैयार कीजिए। **5**

उत्तर :

दिल्ली के मशहूर
श्याम गोलगप्पे
मीठे व खट्टे पानी के चस्के। **खाने में परफ़ेक्ट, करते सबको अट्रेक्ट।**
आइए, खाइए और सभी को खिलाए।
सी–4/36, यमुना बिहार न्यू मार्केट, नई दिल्ली।

अथवा

आपके विद्यालय में श्रेया घोषाल की गायकी का कार्यक्रम है। इस संदर्भ में किसी प्रतिष्ठित समाचार पत्र में देने योग्य विज्ञापन 25–50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

महानगर में पहली बार सुविख्यात सिने गायिका श्रेया घोषाल के सदाबहार गीतों की रंगारंग प्रस्तुति
एक शाम–श्रेया के नाम
संगीत संध्या का आनंद उठाने हेतु आप सादर आमंत्रित हैं।
कार्यक्रम–स्थल राजधानी पब्लिक स्कूल का बड़ा हॉल, दिल्ली दिनांक : 25 नवंबर 20..... समय : सायं 4 बजे से रात्रि 8 बजे तक
आयोजक : साहित्य समिति, राजधानी पब्लिक स्कूल, दिल्ली

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and paper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.